पाठ - 15

तानसेन

घनी झाड़ियों में सिंह की दहाड़ सुनकर स्वामी हरिदास की शिष्य मंडली भयभीत हो उठी। लोग सावधान हो ही रहे थे कि झाड़ियों के बीच से दस वर्ष का एक बालक हँसता हुआ बाहर निकला। स्वामी जी ने समझ लिया कि यही बालक सिंह की दहाड़ की नकल कर रहा था।

स्वामी हरिदास संगीतज्ञ थे। वे जान गए कि इस बालक में अद्भुत क्षमता विद्यमान है। उन्होंने उसे बुलाकर स्नेह से पूछा-

'बेटा तुम्हारा नाम क्या है ?'

'तन्ना मिश्र।'

'तुम्हारे पिता का क्या नाम है ?'

'मकरन्द मिश्र।'

'तुम कहाँ रहते हो ?

‘वहाँ, बालक ने अपने गाँव की ओर इशारा किया।

स्वामी हरिदास तन्ना के घर गए। उन्होंने तन्ना को शिक्षा देने के लिए उसके पिता से माँग लिया। उसे लेकर स्वामी जी वृन्दावन चले गए। उन्होंने उसे दस वर्ष तक संगीत की शिक्षा दी। संगीत की विभिन्न राग-रागिनियों में पारंगत होने के बाद तन्ना मिश्र बाद में ‘तानसेन’ नाम से विख्यात हुए। संगीत का और ज्ञान अर्जित करने के लिए उन्हें स्वामी जी ने हजरत मुहम्मद गौस के पास ग्वालियर भेज दिया।

संगीत का पर्याप्त ज्ञान अर्जित करने के बाद तानसेन पुनः स्वामी हरिदास के पास मथुरा लौट आए। यहाँ उन्होंने स्वामी जी से ‘नाद’ विद्या सीखी। अब तक तानसेन को संगीत में अद्भुत सफलता मिल चुकी थी। इनके संगीत से प्रभावित होकर रीवाँ-नरेश ने इन्हें अपने दरबार का मुख्य गायक बना दिया। रीवाँ-नरेश के यहाँ अकबर को तानसेन का संगीत सुनने का अवसर मिला। वह इनके संगीत को सुनकर भाव-विभोर हो उठे। उन्होंने रीवाँ नरेश से आग्रह कर तानसेन को अपने दरबार में बुला लिया। इनके संगीत से प्रभावित होकर अकबर ने इन्हें अपने नवरत्नों में स्थान दिया। तानसेन के विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि इनके गायन के समय राग-रागिनियाँ साक्षात प्रकट हो जाती थीं।

एक बार बादशाह अकबर ने तानसेन से ‘दीपक’ राग गाने का हठ किया। निश्चित समय पर इन्होंने दरबार में दीपक राग गाना शुरू किया। ज्यों-ज्यों आलाप बढ़ने लगा गायक और श्रोता पसीने से तर होने लगे। गाने का अंत होते-होते दरबार में रखे दीपक स्वयं जल उठे और चारों ओर अग्नि की लपटें दिखाई देने लगीं। दरबारियों में हाहाकार मच गया और वे इधर-उध्ार भागने लगे। कहा जाता है कि तानसेन की पुत्री सरस्वती ने मेघ मल्हार राग गाकर अग्नि का शमन किया और लोगों की प्राणरक्षा की।

तानसेन के जीवन से ऐसी अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाएँ जुड़ी हैं, जैसे संगीत के प्रभाव से पानी बरसाना, वन्य-पशुओं को सम्मोहित करना तथा असाध्य रोगों को ठीक करना आदि।

अकबर के आदेश से एक बार आगरा के समीप वन में संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता आरंभ हुई। तानसेन की स्वर लहरी से मुग्ध मृगों का समूह उनके पास आया। उन्होंने एक मृग के गले में अपनी माला डाल दी। संगीत समाप्त होने पर मृग जंगल में भाग गए। यह देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित हो गए।

तानसेन संगीत की दुनिया के सम्राट माने जाते हैं। दरबारी, तोड़ी, मियाँ की मल्हार, मियाँ की सारंग आदि अनेक राग-रागिनियों की रचना तानसेन ने ही की थी। 1589 ई0 में इस महान गायक का स्वर्गवास हो गया। ग्वालियर में इनकी समाधि बनी है। इस समाधि पर प्रतिवर्ष संगीत समारोह होता है जिसमें संगीतज्ञ आकर अपने श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं। तानसेन की सफलता का मूल आधार है उनकी कार्य के प्रति निष्ठा तथा निरन्तर कठिन अभ्यास की आदत। इन्हीं गुणों के कारण वे महान संगीतज्ञ बनने में सफल हुए।

अभ्यास

1. तानसेन का वास्तविक नाम क्या था ?

2. तानसेन ने संगीत किन-किन लोगों से सीखा ?

3. अकबर का तानसेन से परिचय कैसे हुआ ?

4. तानसेन की सफलता का मूल आधार क्या है ?

5. सही विकल्प छाँटकर लिखिए-

   (क) तानसेन को सर्वप्रथम संगीत की शिक्षा-

   - स्वामी नरहरिदास ने दी थी।
   - स्वामी हरिदास ने दी थी।
   - हजरत मुहम्मद गौस ने दी थी।
   - रीवाँ नरेश ने दी थी।

   (ख) संगीत से प्रभावित होकर अकबर ने तानसेन को

   - पुरस्कार दिया ।
   - संगीत शिक्षक बना दिया।
   - मंत्री बना दिया।
   - नवरत्नों में स्थान दिया।

6. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

- संगीत की विभिन्न राग-रागिनियों में पारंगत होने के बाद तन्ना मिश्र .....नाम से विख्यात हुए।
- तानसेन की सफलता का मूल आधार उनकी कार्य के प्रति ..... तथा निरन्तर ..... की आदत थी।
- कठोर परिश्रम एवं लगन से व्यक्ति निश्चय ही ..... के शिखर पर चढ़ सकता है।